International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गोरखपुर जिला के संदर्भ में मधुमेह से ग्र सत रो गयों पर एक अध्ययन

प्रयंका संह
शोध छात्रा, गृह वज्ञान वभाग
ल लत नारायण म थला वश्व वद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

सारांश

मधुमेह न केवल भारत का मुख्य समस्यात्मक रोग है बल्कि वश्व के अनेक देशों में इसके रोगी अ धक है। वर्तमान में मधुमेह के रो गयों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यद्य प इस रोग के निदान हेतु काफी प्रयत्न कए जा रहे हैं। वैज्ञानिकों तथा च कत्सकों द्वारा अथवा परिश्रम कर दवाइयां, इंसु लन आदि का निर्माण कया जा रहा है। परंतु रोग के कारणों का सही सही पता अब तक नहीं चल सका है। यद्य प सन **1921** में ही कनाडा के डॉक्टर फ्रेडरिक ग्रांट बैटिंग तथा डॉक्टर चार्ल्स हार्बर्ट ने सबसे पहले प्राकृतिक इंसु लन की खोज की थी। इंसु लन मधुमेह के रो गयों के लए लाभदायक होता है।

मधुमेह जिसे "चीनीया पेशाब" भी कहते हैं शरीर में इंसु लन हार्मोन के स्त्रावन के कारण होता है। यह उपापचय संबंधी रोग है इंसु लन की कमी के कारण कार्बोज का उपापचय ठीक प्रकार से नहीं हो पाने के कारण मधुमेह रोग हो जाता है।यह रोग एक बार लग जाने पर इससे मुक्ति पाना आसान नहीं है। अतः यह जीवन पर्यंत चलने वाला रोग है। व्यक्ति की मृत्यु के साथ ही रोग का अंत होता है। यह रोग कसी भी व्यक्ति को कसी भी उम्र में हो सकता है। परंतु **50-60** वर्ष की उम्र में इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है। कई बार इंसु लन के स्त्रावन में कोई कमी नहीं होती है फर भी इसके प्रभाव में कमी होने से रोग हो जाता है।

शब्द कुंजी

इंसु लन, मधुमेह, चीनिया पेशाब, दवाइयाँ, वैज्ञानिक, च कत्सक

प्रस्तावना

एक अनुमान के अनुसार सर्फ भारत में **30** लाख से भी अ धक लोग मधुमेह रोग से पी ड़त हैं। प्रतिवर्ष लगभग **30-35** हजार व्यक्तियों की मृत्यु मधुमेह रोग के कारण हो जाती है। मधुमेह रोग वंशानुगत रोग होता है। यदि माता- पता दोनों ही अथवा इनमें से कोई भी इस मधुमेह रोग से पी ड़त होते हैं, तो उनके बच्चों में भी इस रोग के होने की संभावना प्रबल हो जाती है। यदि बच्चों में प्रत्यक्ष रूप से मधुमेह नहीं भी होता है तो भी वे इस रोग के वाहक

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हो जाते हैं। अतः रोग एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में वंशानुगत रूप से हस्तांतरित होती रहती है। यदि कसी व्यक्ति के **40** वर्ष पहले ही मधुमेह में हो जाता है तो ऐसा वंशानुगत के कारण होता है। मधुमेह कभी भी कसी भी उम्र के व्यक्ति में हो सकता है। शैशवावस्था में भी मधुमेह होता है, परंतु तब यह रोग अस्थाई होता है जो कुछ दिनों के बाद स्वतःही ठीक हो जाता है। **40-50** वर्ष में मधुमेह होने की संभावना काफी हद तक बढ़ जाती है।

मोटे व्यक्तियों को मधुमेह अ धक होता है। प्रौढ़ावस्था में, वशेषकर **35-40** वर्ष की अवस्था में शरीर में वसा संग्रह की प्रकृति बहुत अ धक बढ़ जाती है। मोटे व्यक्तियों की शारीरिक क्रयाशीलता भी कम होती है। इस कारण कार्बोज का उपापचय ठीक प्रकार से नहीं हो पाता। क्यों क जिस अनुपात में कार्बोज युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन कया जाता है। उस अनुपात में इंसु लन का स्त्रावन नहीं हो पाता है। परिणाम स्वरूप मधुमेह रोग हो जाता है।

यद्य प यह रोग स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों को ही होता है परंतु पुरुषों में स्त्रियों की अपेक्षा इस रोग के होने की प्रबल संभावना रहती है। मान सक तनाव, क्रोध, उद्वेग, चंता, भय आदि कारणों से व्यक्ति समय पर भोजन नहीं ग्रहण करता है, जिससे अनिय मतता उत्पन्न हो जाती है। अतः कार्बोज उपापचय प्रभा वत होता है तथा मधुमेह हो जाता है। मधुमेह की स्थिति में उत्तकों में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ जाती है। सामान्यतः प्रौढ व्यक्ति के रक्त मे ग्लुकोज **80-120** उहध्**100**उस होता है। परन्तु इन्सु लन के अल्प स्त्रावण से रक्त मे ग्लुकोज की काफी मात्रा बढ़ जाती है तथा पेशाब निकलने लगता है। जिसके कारण ग्लाइकोसुरिया हो जाता है। ऊतको मे ग्लुकोज की आक्सीकरण क्षमता काफी कम हो जाती है, परिणामतः रक्त मे ग्लुकोज बढने लग जाता है।

यदि रक्त मे ग्लुकोज की मात्रा **180**उहध्**100** उस इसववक होता है तब ग्लुकोज पेशाब के माध्यम से निकलने लगता है।मधुमेह की स्थिति में रक्त मे **400-600** उहध्**100**उस तक ग्लुकोज की मात्रा बढ़ जाता है जिससे ग्लाइकोसुरिया हो जाता है। बार-बार अत्य धक मात्रा में मूत्र त्याग होने लगता है।

जैसा की हम जानते है क शरीर के लए ग्लुकोज मुख्यतः तीन स्त्रोतो से प्राप्त होता है।

क. कार्बोज ख. वसा ग. प्रोटीन

मधुमेह की स्थिति में कार्बोज का उपापचय ठीक प्रकार से नही हो पाने के कारण यकृत मे ग्लाइकोजन का निर्माण बन्द हो जाता है। इस कारण यकृत मे ग्लाइकोजन की मात्रा अत्यन्त न्युन हो जाती हैं।शरीर के व भन्न आन्तरिक तथा बाहरी क्रयाओ को करने के लए उर्जा की आवश्यकता होती है। परन्तु मधुमेह की अवस्था मे उर्जा प्रदान करने हेतु ग्लुकोज का उपयोग नही कया जाता है। अतः वसा ही शरीर को उर्जा प्रदान करने हेतु एसीटेट तथा वसीय अम्लो

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मे वभक्त हो जाता है। ऐसी परिस्थिति मे वसीय अम्ल के उपापचय के फलस्वरुप एसीटोन तथा कीटोन बाडी मे एसीटिक अम्ल, एसीटोन तथा पालीहाइड्राक्सी व्यूटाइरिक अम्ल होता है। ये सभी वषाक्त पदार्थ होते है। इनका निष्कासन गुर्दे द्वारा नही हो पाता है ।अतः रक्त मे इसकी मात्रा बढ़ जाती है,जिससे रोगी व्यक्ति के शरीर मे निर्जलीकरण तथा बेहोशी जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। रक्तसीरम मे कोलेस्ट्राल तथा ट्राइग्लिसराइड की मात्रा बढ़ जाती है।

कार्बोज का शरीर मे पूर्णतः चयापचय नही होने के कारण प्रोटीन ही उर्जा प्रदान करने का काम करने लग जाता है यद्य प प्रोटीन का मुख्य काम निर्माणात्मक होता है, परन्तु कार्बोज के चयापचय मे गड़बड़ी होने से ऊतक प्रोटीन ही उर्जा देने का काम करने लग जाता है, जिसके कारण प्रोटीन का वघटन होने लगता है। परिणामस्वरुप शरीर मे आवश्यक अमीनो अम्ल की कमी हो जाती है तथा शरीर मे ऋणात्मक नाइट्रोजन सन्तुलन हो जाता है। प्रोटीन के बिना नाइट्रोजन वाला भाग (लगभग **58** प्रोटीन) ग्लुकोज मे बदल जाता है जिसके कारण रक्त मे ग्लुकोज की मात्रा में और भी अ धक बढोत्तरी हो जाती है तथा रोगी कमजोर एवं दुर्बल हो जाता हैं। बालको मे मधुमेह जब **20** वर्ष से कम उम्र में हो जाता है तब इसे जुवेनाइल डायबिटिज कहते है। जुबेनाइल डायबिटिज का मुख्य कारण शरीर मे इन्सु लन हारमोन का अल्प स्त्रावण होता है। रोगी बालक अक्सर निर्बल कमजोर, अशक्त एवं कुपोषण के शकार होते है। उपचार हेड बालको के आहार मे उच्च प्रोटीन कैलोरीयुक्त भोज्य पदार्थों का समावेश कया जाना चाहिए ।

उच्च जै वक मूल्यों वाला प्रोटीन दिया जाना चाहिए, साथ ही साथ इंसु लन का इंजेक्शन भी दिया जाना चाहिए ता क रक्त मे ग्लुकोज की मात्रा सामान्य हो सके । इस प्रकार का मधुमेह वयस्को मे होता है। मोटे लोग इस रोग के अ धक शकार होते है।मोटापे से ग्रस्त मधुमेह के रो गयो को पहला उपचार उनका वजन कम करना होता है। मुह से एन्टीडायबेटिक दवाइयाँ दी जाती है। अल्प भार से ग्र सत मधुमेह के रो गयो को उच्च कैलोरी व प्रोटीनयुक्त आहार दिया जाता है। साथ ही एन्टीडायवेटिक दवाइयाँ भी दी जाती है, जिससे रक्त में ग्लूकोज का स्तर समान्य हो जाता है। वयस्को को इन्सु लन का इंजेक्शन बालकों की अपेक्षा कम दी जाती है।

प्रारम्भिक अवस्था में मधुमेह का पता नही चल पाता है। इसका पता धीरे-धीरे ही लगता है। रोग की तीव्रता की स्थिति मे अथवा संक्रामक रोगों के कारण एसीडो सस होने पर अथवा बहोशी जैसी स्थिति आने पर ही मधुमेह का पता चल पाता है । मूत्र परीक्षण (न्तपदम ज्मेज) से मधुमेह का पता चल जाता है **40** वर्ष की उम्र के बाद मूत्र जॉच अवश्य कया जाना चाहिए। निम्न अवस्थाओ में भी मूत्र की जॉच करवा लेनी चाहिए-

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

घर के कसी भी सदस्य को मधुमेह होने पर शरीरिक भार में अचानक कमी होने पर शरीरिक भार मे अचानक वृ द्ध होने पर घाव जल्दी नही भर पाने की दशा में त्वचा मे घाव एवं अन्य वकार होने पर।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

इस अध्ययन मे मैने कार्य क्षेत्र सु वधा अनुसार गोरखपुर जिला को लया है। जो यह गोरखपुर जिला के सन्दर्भ मे मधुमेह रोग से ग्र सत रो गयो पर एक अध्ययन मैने, उसका, रमवापुर गोरखपुर, लखेसरा, गोनरहा, महराजी, अगया, मटिहनिया आदि छोटे-बड़े स्थानों का सर्वे कया।

1. मैने अपने सर्वेक्षण मे सभी वर्गों को लया।

2. इस अध्ययन मे न्यायदर्श मे सर्फ गोरखपुर जिला को लया गया है।

3. इस अध्ययन मे मधुमेह रोग से ग्र सत रो गयो पर अध्ययन एवं वचार कया गया है।

4. इस अध्ययन मे सौ उत्तरदाता का सर्वेक्षण आकड़ो के द्वारा प्राप्त क गई अतः इस परिवारो का न्याय दर्श मे लया गया।

उद्देश्य

अनुसंधान कर्ता ने अपने शोध वषय 'गोरखपुर जिला के सन्दर्भ में मधुमेह से ग्र सत रो गयो पर एक अध्ययन को सम्पादित करने हेतु सरलता की दृष्टि से शोध को अध्ययन करने के लए व भन्न उद्देश्यो का निर्माण कया है। ये उद्देश्य सरल व प्रभावी है जो क निम्न ल खत है।

1. डाय वटिज के प्रति लोगो मे जागरूकता लाना

2. मधुमेह वंशानुगत रोग है जिसका अध्ययन करना

3. इन्सु लन मधुमेह के रो गयो के लए लाभदायक है।

4. मधुमेह के कारण ऑखो के स्वास्थ्य एवं रोशनी पर भी प्रभाव पड़ता है जिसका सुझाव देना

अध्ययन क्षेत्र में चयन का आधार

क्र मक अध्ययन निम्न प्रकार से योजनाबध्द है-

- स्थान का चुनाव
- अनुसंन्धान का प्रारूप
- चर एव अचर मान

(क) स्वतन्त्र चर

(ख) आ श्रत चर

- प्रयुक्त साधन

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(क) सामान्य साधन

(ख) व शष्ट साधन

- आकड़ो का संग्रह
- अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी का वश्लेषण

(क) सारणी व ध

(ख) प्रतिशत व ध

अध्ययन स्थान का चुनाव-

अनुसंधान के क्षेत्र के चयन हेतु गोरखपुर क्षेत्र के अन्तर्गत रमवापुर,उसका कुड़ाघाट, अगया, माटिहनिया आदि स्थानो को चुनाव कया

शोध का प्रारूप

अनुसंधान कर्ता ने अपने प्रोजेक्ट कार्य में ववरणात्मक शोध प्रणाली का प्रयोग कया है इसके अन्तर्गत प्रश्नावली की सहायता ली गयी है।

चर एवं अचर मान- वैज्ञानिक अनुसंधान की अध्ययन की रूपरेखा के व ध निर्धारित करने मे चर का अत्य धक महत्व है। कसी भी प्रयोग मे चर का उपयोग अत्य धक आवश्यक होता है। अनुसंधान कर्ता अपने शोध वषय गोरखपुर जिला के अन्तर्गत मधुमेह से ग्र सत रो गयो पर एक अध्ययन अन्तर्गत आने वाले चरो के वर्गीकरण को निम्न प्रकार से प्रस्तुत कया है।

(1) स्वतन्त्र चर

(2) अ श्रत चर

(1) स्वतन्त्र चर- स्वतन्त्र चर वह कारक है जिन्हें प्रयोग कर्ता निरिक्षण की गयी घटनाओ या तथ्यो के बीच सम्बन्ध ज्ञान करने के लए प्रहस्त करता है अथवा इस चर पर अध्ययन कर्ता का नियन्त्रण होता है।

अनुसंधान कर्ता के शोध वषय में निम्न स्वतन्त्र चर है-

सामान्य व्यक्तिगत ववरण

(1) आयु

(क) 20-30

(ख) 30-45

(ग) 45-60

(घ) 60-75

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(2) शै क्षक योग्यता-

(क) अ श क्षत

(ख) इण्टरमी डएट

(ग) स्नातक

(घ) स्नातकोत्तर

(3) आय

(क) 10-15

(ख) 15-20

(ग) 20-25

(घ) 25-35

(4) धर्म

(क) हिन्दू

(ख) मुस्लिम

(ग) सख

(घ) इसाई

(5) परिवार

(क) संयुक्त परिवार

(ख) एकांकी परिवार

(ग) वहिन परिवार

(घ) उपर्युक्त परिवार

आ श्रत चर- आ श्रत चर वह चर है जो प्रयोगकर्ता के द्वारा स्वतन्त्र चर के प्रदर्शन करने पर प्रद र्शत होता है।

अनुसंधान कर्ता ने अपने शोध वषय में गोरखपुर जिला के अन्तर्गत मधुमेह से ग्र सत रो गयो पर एक अध्ययन के अन्तर्गत आ श्रत चर के रूप मे लया गया है।

अनुसंधान मे प्रश्नावली को साधन के रूप में प्रयोग कया गया जिसके अन्तर्गत ववरणात्मक प्रणाली का प्रयोग सम्मि लत है ये आ श्रत चर व धयो द्वारा बनायी गयी है।

1. सामान्य परिचय- इसमें व्यक्ति के नाम पता आयु शै क्षक योग्य व्यवसायध्नौकरी आदि को सम्मि लत कया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. व शष्ट परिचय- इसमे वषयो से सम्बन्धित प्रश्नो के बारे जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रश्नावली में **5** ववाहित लोगो द्वारा पूरी करायी गयी है जिससे उन्होने अपने - अपने वचारो को सही प्रतीत प्रस्तुत कया है।

आकड़ो का संग्रह- अनुसंधान कर्ता प्रश्नो का चुनाव इस प्रकार कया गया है क कुछ बहुबिक्लपीय कुछ हाँ नही है इस लए अनुसंधानकर्ता ने यह प्रश्न बाटकर कार्य पूर्ण कया।

अध्ययन में प्रयुक्त साख्यिकी का वश्लेषण - आकड़ो का वश्लेषण निम्न तरह से कया गया है।

1. सारणी व ध

2. प्रतिशत व ध

1. सारणी व ध- इस व ध मे दो कालम बनाये गये है जिसमे क्षैतिज मे **50** उत्तरदाताओ को देखा गया है तथा एक लम्बवत पूर्ण प्रश्नो को अनेक वकल्पो के अनुसार सम्मि लत कया गया है इसके सही व गलत उत्तरो आधार पर उत्तरदाताओ को अंक दिये गये हैं जिसमे सही उत्तर पर अ धकतम अंक व न्यूनतमं अंक अन्य सभी प्रश्नो पर उनके उत्तर के आधार पर **1-1** अंक दिये गये है।

2. प्रतिशत व ध-

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{व शष्ट वर्ग के उत्तरदाताओ की संख्या ग } \mathbf{100}}{\text{कुल उत्तरदाताओ की संख्या}}$$

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी संख्या- 1

मधुमेह रोग मे शर्करा निकलने लगती है-

क्रम संख्या	शर्करा निकलने लगती है	आवृति N¾ 50	प्रतिशतः N¾100%
क.	मूत्र द्वारा	**40**	**80%**
ख.	थूक द्वारा	**5**	**10%**
ग.	रक्त द्वारा	**3**	**6%**
घ.	मल द्वारा	**2**	**4%**
	योग	**50**	**100%**

गर्भवती स्त्री के मूत्र की जांच अवश्य की जानी चाहिए। गर्भावस्था मे हाइयरथाएराइ डज्म की स्थिति मे भी मूत्र से शर्करा निकलने लगता हैं कभी-कभी मधुमेह के अतिरिक्त अन्य बीमारियों मे भी मूत्र द्वारा ग्लूकोज का उत्सर्जन होने लगता है। यदि मूत्र तथा रक्त दोनो मे ही अ धक ग्लूकोज की उपस्थिति हो तो निश्चितपूर्वक समझना चाहिए क मधुमेह ही है।

सर्वे से पता लगा क **(80%)** लोगो को पता था क मधुमेह की स्थिति मे मूत्र से शर्करा निकलने लगती है। और बाकी **(10%)** थूक द्वारा **(6%)** रक्त द्वारा तथा **(4%)** मल द्वारा लोगों ने उत्तर दिया। **(80%)** लोगो को सही जानकारी थी।

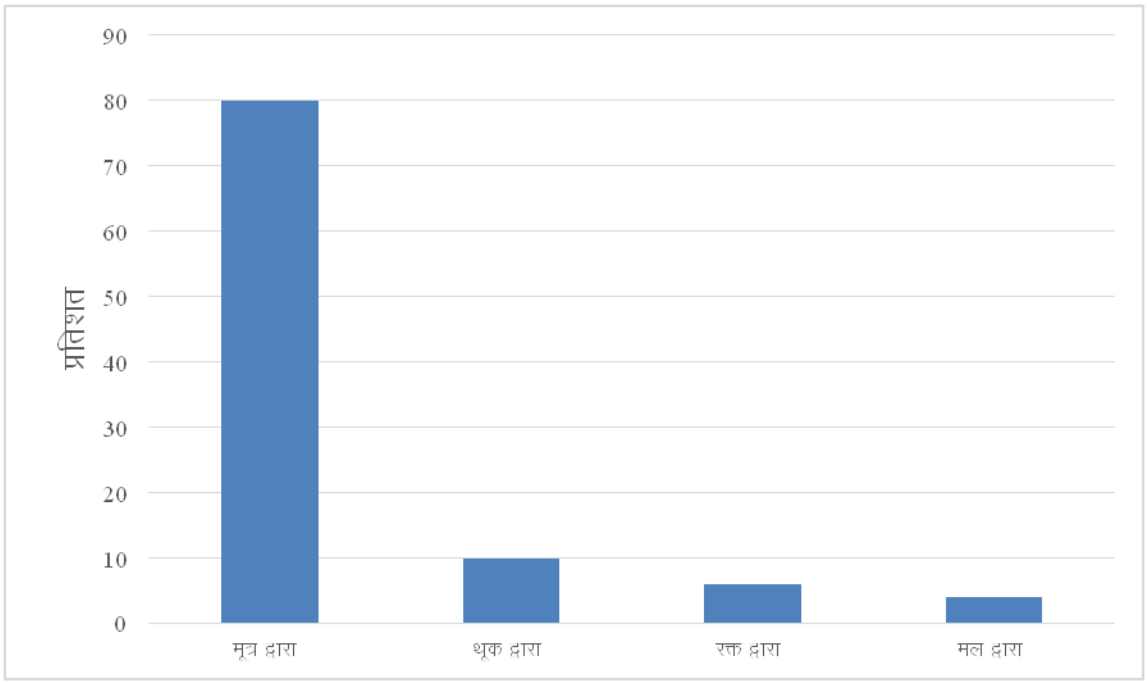

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी संख्या- **2**

ग्लुकोज कन स्त्रोतो से प्राप्त होता है-

क्रम संख्या	ग्लुकोज प्राप्त होता है	आवृति N¾ 50	प्रतिशत N¾ 100%
क.	कार्बोज	**23**	**46%**
ख.	वसा	**5**	**10%**
ग.	प्रोटीन	**10**	**20%**
घ.	उपर्युक्त सभी	**12**	**24%**
	योग	**50**	**100%**

यदि मधुमेह के रोगी का वजन सामान्य है तथा मूत्र परीक्षण मे कीटोन बॉडीज उपस्थित नही है, तब इनके भोजन मे कार्बोज ही मात्रा कम होनी चाहिए। साथ ही दवा का भी उपयोग कया जाना चाहिए। यदि दवा से तथा आहार नियंत्रण से भी ग्लूकोज का नियंत्रण कया जाना चाहिए।

सर्वेक्षण करने पर पता चला क **(46%)** कार्बोज **(10%)** वसा **(20%)** प्रोटीन तथा **(24%)** उपरोक्त सभी इस प्रकार से जबाब मला।

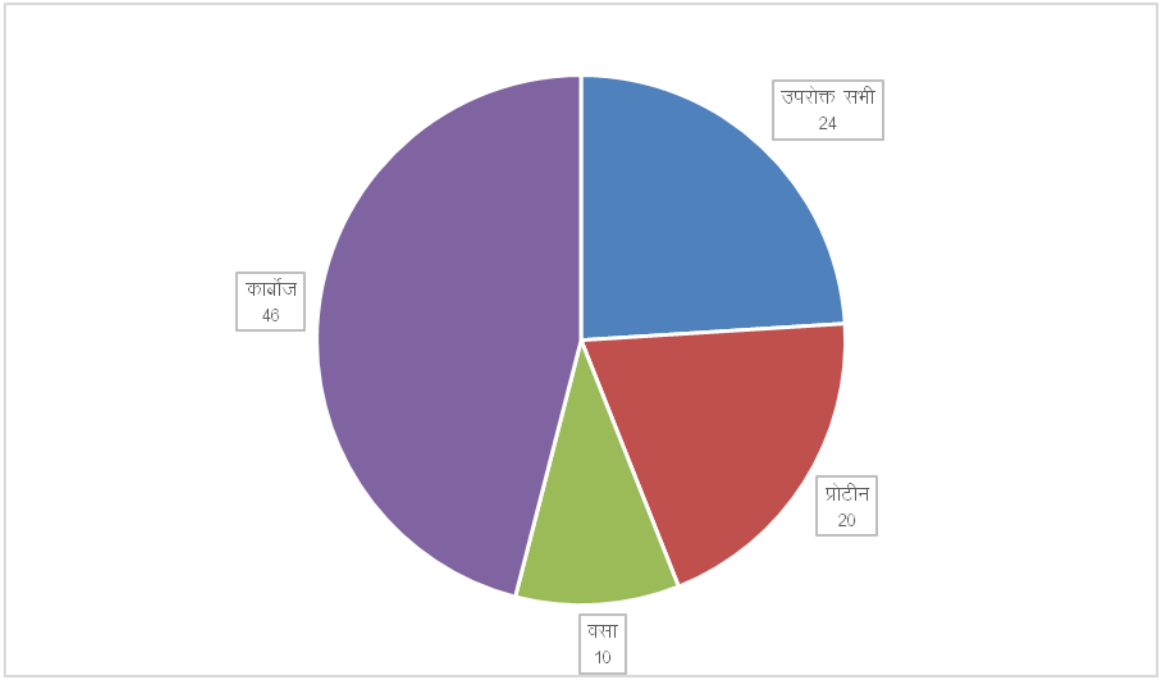

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी संख्या- 3

मधुमेह रोग को प्रभा वत करने वाला प्रमुख कारक है-

क्रम सख्या	प्रभा वत करने वाला कारक	आवृति N¾ 50	प्रतिशत N¾100%
क.	आनुवं शकता	**9**	**18%**
ख.	मोटापा	**19**	**38%**
ग.	मान सक तनाव व चन्ता	**7**	**14%**
घ.	उपर्युक्त सभी	**15**	**30%**
	योग	**50**	**100%**

मोटे व्यक्तियो का मधुमेह अ धक होता है। प्रोढ़ावस्था मे वशेषकर **35-40** वर्ष की अवस्था मे शरीर मे वसा संग्रह की प्रकृति बहुत अ धक बढ़ जाती है। मोटे व्यक्तियो की क्रयाशीलता भी कम होती है। इस कारण काब्रोज का चयापचय ठीक प्रकार से नही हो पाता है तो मधुमेह रोगे हो जाता है। मोटापा ही मधुमेह रोग को प्रभा वत करने का प्रमुख कारण है।

अध्ययन के दौरान पता चला क **(18%)** आंनुव शकता**, (38%)** मोटापा **(14%)** मान सक तनाव एवं चन्ता **(30%)** उपर्युक्त सभी के उत्तरदाता मले है।

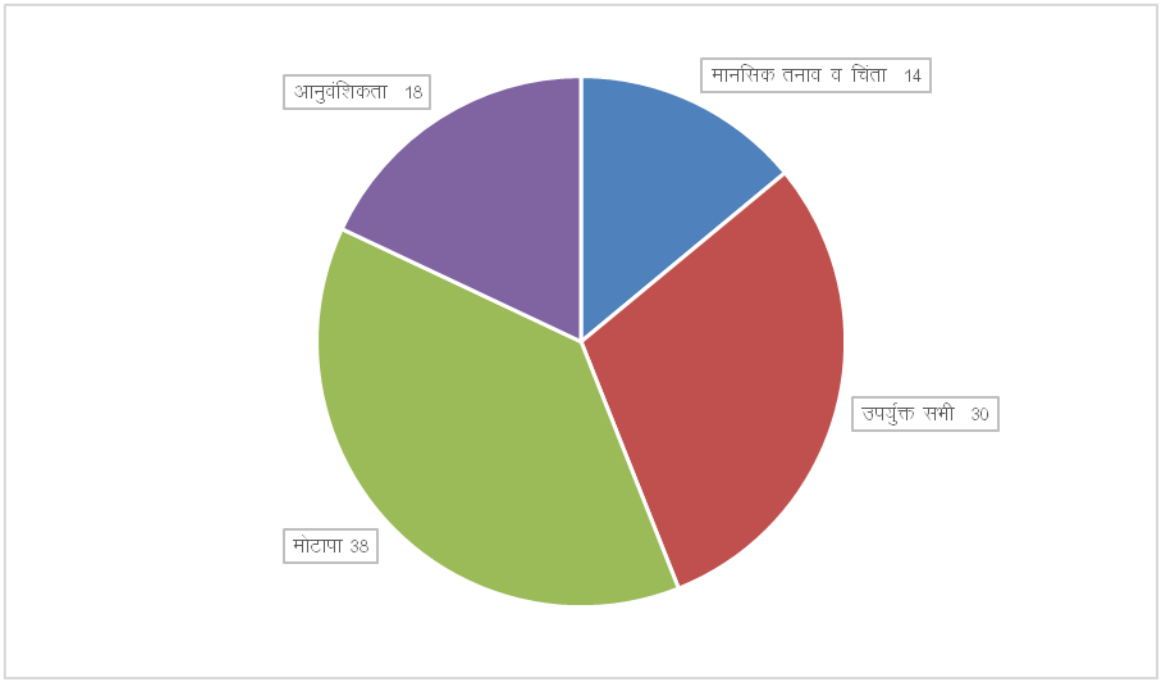

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

हमने गोरखपुर जिले के सन्दर्भ में मधुमेह से ग्र सत रो गयो पर एक अध्ययन कया। सर्वेक्षण के दौरान लोगो में परेशानिया उनमें कैसा परिवर्तन होता है और मधुमेह हो जाने के बारे में लोगो से जानकारी ली। सर्वेक्षण में अ धक हिन्दू धर्म के पाये गये है देश मे मधुमेह रो गयो की संख्या साल दर साल लगातार बढती जा रही है। इससे चंतित वश्व स्वास्थ्य संगठन और इंटरनेशनल डायबिटिज फेडरेशन ने इस साल मधुमेह को करना ही होगा नियंत्रित का नारा दिया है।

सर्वेक्षण के दौरान यह निष्कर्ष निकला की आधुनिक युग में परिवार का स्वरूप अ धकतर एकाकी है और शक्षा का स्तर भी ग्रामीण लोगो में बढा है जिसके कारण लोगो का स्तर पढाई में स्नाकोत्तर तक उत्तरदाता अ धक मले है। शक्षा के कारण आय में भी वृद् व है जिसके कारण **10-15** हजार तक के उत्तरदाता अ धक है।

मधुमेह को साधारण भाषा में शुगर कहते है इसकी जानकारी हर कसी को थी। **46** प्रतिशत लोग मधुमेह रोग यदि माता पता को हुआ है तो **64** प्रतिशत लोग यह मानते है क बच्चो को भी हो सकता है। **80** प्रतिशत लोगो को जानकारी भी क मधमेंह रोग मे मूत्र द्वारा शर्करा निकलने लगती है। जब मधुमेह ज्यादा बढ़ जाता है तो **54** प्रतिशत मानते है क इन्सु लन का इजेक्शन देकर इसका उपचार कया जा सकता है मूत्र परीक्षण से प्रारम्भिक अवस्था में मधुमेह का पता लगाया जा सकता है। **90** प्रतिशत लोगो को यह जानकारी थी क अ धक उर्जा ग्रहण करने से मधुमेह रोग हो सकता है। **64** प्रतिशत लोगो का मानना है क **20** साल तक के बच्चो को जुबेनाइल डायबिटिज होता है। **60** प्रतिशत लोगो को यह जानकारी पूर्ण रूप से भी क मोटापा कम करने के लए एन्टीडायबेटिक दवाइया दिया जाना चाहिए।

36 प्रतिशत लोगो का मानना है क कीटोन्स के अम्लीय होने के कारण शरीर में अम्लीयता के लक्षण होने के कारण शरीर में अम्लीयता के लक्षण होने लगते है। **54** प्रतिशत लोग मानते है क मधुमेह रोग की तीव्र अवस्था मे नाडी सम्बन्धी वकार चड़ चड़ापन उत्पन्न कर देता है। **50** प्रतिशत लोगो को यह जानकारी भी क बाजार में इन्सु लन **6** तरह के मलते है। **36** प्रतिशत लोग यह मानते है क मधुमेह जन्म से ही होता है।

इस प्रकार से उत्तरदाताओ ने अपना अपना जबाब सही रूप से दिया है और उन्हे मधुमह के बारे में कतनी जानकारी है यह भी हमे पता चला हैं। सर्वेक्षण के बाद उन्हे पूर्ण रूप से मधुमेह के बारे मे जानकारी दी गयी है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संह, बृन्दा **(श्रीमती)** डा**0** सन **2008,** आहार एवं पोषण वज्ञान**,** छठा संस्करण पृष्ठ संख्या**- 642-655,** पंचशील प्रकाशन**,** जयपुर

2. संकद**,** नीलम**,** सन् मार्च **2008,** पत्रिका बनिता**,** पेज संख्या **96-98**

3. लाइव जिन्दगी सन**,** 17 अक्टूबर **2010,** अमर उजाला**,** पेज संख्या**-4**

4. मेहेरोत्रा**,** टण्डन उषा **(श्रीमती)** डा**0** सन् **2011** आहार एवं पोषण वज्ञान बारहवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या **-187-198** साहित्य प्रकाशन आगरा।

5. खनूजा**,** रीना डा**0** सन् **2009,** आहार एवं पोषण वज्ञान**,** प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या **617-622,** अग्रवाल पब्लिकेशन**,** आगरा**-2**

6. संह**,** अनीता डा**0** सन् **2008** आहार एवं पोषण वज्ञान पचवा संस्करण**,** पृष्ठ संख्या **412-418,** स्टार पब्लिकेशन**,** आगरा